अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 28 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

सच्ची दोस्ती धीमी गति से उगने वाला पौधा है, इस पदवी का हकदार बनने के लिए विपत्ति के झटकों से गुजरना और सहना होगा।
- जॉर्ज वाशिंगटन

प्रथम अमेरिकी राष्ट्रपति

आकाश विजयवर्गीय को यदि नगर निगम के अमले से किसी तरह की शिकायत थी, तो वह कानूनी रास्ते से कार्रवाई कर सकते थे, लेकिन जब कानून के रखवाले ही कानून अपने हाथ में लेने लगेंगे तो फिर व्यवस्था कैसे काम करेगी।

कानून के रखवाले

इंदौर में एक जर्जर मकान को ढहाने गए नगर निगम के अधिकारियों पर भाजपा के युवा विधायक आकाश विजयवर्गीय और उनके समर्थकों द्वारा किया गया हमला राजनीतिक रसूख और दबंगई दिखाने का ही एक और मामला है। हैरानी इस बात की है कि बल्ले से एक अधिकारी को पीटते नजर आए आकाश यह मानने को तैयार ही नहीं हैं कि उन्होंने कुछ भी गलत किया! उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है और स्थानीय अदालत ने उन्हें यह कहते हुए जमानत नहीं दी है कि एक विधायक होने के नाते उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह कानून को अपने हाथ में लें। वास्तव में इंदौर में सौ से अधिक पुरानी और जर्जर हो चुकी इमारतों की शिनाख्त कर उन्हें ढहाने का आदेश मध्य प्रदेश की पिछली शिवराज सिंह की अगुआई वाली भाजपा सरकार ने दिया था और जिस इमारत को ढहाने के लिए नगर निगम का अमला गया था, उसे खाली करवाने के लिए तीन नोटिस पहले दिए जा चुके थे। ध्यान रहे, पिछले वर्ष ही इंदौर में एक चार मंजिला होटल के ढह जाने से दस लोगों की मौत हो गई थी। यदि इस खास इमारत में किसी कांग्रेसी नेता या अधिकारियों की कोई दिलचस्पी रही भी होगी, तो इस पर कानूनी रास्ते से शिकायत और कार्रवाई की जा सकती थी। मगर जैसा कि आकाश ने खुद कहा है कि उन्होंने, 'आवेदन, निवेदन और फिर दे दना दन' का रास्ता अख्तियार किया! इसे किसी भी तरह से जायज नहीं ठहराया जा सकता। गौर करने लायक बात यह भी है कि आकाश कोई आम विधायक नहीं हैं, बल्कि वह भाजपा के वरिष्ठ नेता और पश्चिम बंगाल के प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय के पुत्र हैं, जिन्हें सात महीने पहले हुए विधानसभा चुनाव में स्थानीय विधायक ऊषा ठाकुर का टिकट काटकर भारी विरोध के बीच उम्मीदवार बनाया गया था। यही नहीं, भाजपा एक ओर तो वंशवाद को लेकर कांग्रेस को कोसते नहीं थकती, लेकिन मध्य प्रदेश से ही चुने गए उनके एक केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल का पुत्र प्रबल एक व्यक्ति की हत्या के मामले में जेल में है और इसी मामले में एक भाजपा विधायक का पुत्र फरार है। आकाश विजयवर्गीय भले ही अपने कृत्यों को जायज ठहराने की कोशिश कर रहे हों, लेकिन इससे उनकी पार्टी के साथ ही उनके पिता की छवि पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है, जो भले ही उनका बचाव करते नजर आ रहे हैं।

अंतर्ध्वनि

>> उपमन्यु चटर्जी

क्रूर और भद्दे यथार्थ को सामने लाना एक लेखक का कर्तव्य है

मैं पटना में पैदा हुआ, जबकि मेरी पढ़ाई दिल्ली में हुई। मैं घर और घर से बाहर ऐसे माहौल में रहा, जहां करियर को ज्यादा महत्व दिया जाता था। इसके बावजूद साहित्य पढ़ते हुए मेरे भीतर सोच और संवेदनाएं आकार ले रही थीं। भारतीय प्रशासनिक सेवा यानी आईएएस में चुना जाना मेरे लिए बड़ी उपलब्धि थी। लेकिन सच कहूं, तो इस नौकरी में आने के बाद मैंने जीवन को ज्यादा व्यापकता और गहराई में समझा। यह जीवन ज्यादा जटिल, ज्यादा क्रूर और उतना ही पतनशील था। उस वीभत्स यथार्थ को स्वर देने के लिए मैंने अपना पहला उपन्यास इंग्लिश अगस्ट लिखा। उसका नायक अगस्त्य सेन नैतिक रूप से पतित हो चुके समाज का एक पतित व्यक्ति था। चाहे जिस भी वजह से हो, लोगों को आज भी उसकी याद है। लेकिन कम ही लोग जानते होंगे कि मेरे उस उपन्यास को आठ प्रकाशकों ने खारिज कर दिया था, जिसके बाद मैं निराश हो गया था। उसी समय संयोग से अमिताव घोष के जरिये फाबर से मेरा परिचय हुआ, और उपन्यास छपकर बाहर आया, हालांकि उसमें भी एक साल से ज्यादा लग गया था। लोग मुझे अहंकारी और आक्रामक कहते हैं। यह आईएएस के उस सिस्टम का भी असर हो सकता है, जिसका मैं हिस्सा रहा। मैं दोटूक बोलने वाला व्यक्ति भी हूं। जैसे, मैं यह नहीं कहूंगा कि पूर्णकालिक लेखक होने पर मैं बेहतर लिख सकता था। नौकरी में रहते हुए भी ऑफिस के लिए निकलने से पहले मैं एक पंक्ति ही सही, लेकिन लिखता था। ऐसे ही घर लौटने के बाद भी मैं नियमित लिखता था। मैं यह नहीं मान सकता कि लेखक को हमेशा सुखद और सुरुचिपूर्ण चीजों पर ही लिखना चाहिए। कुरूप और बदसूरत चीजों को सामने लाना भी लेखक का कर्तव्य है।

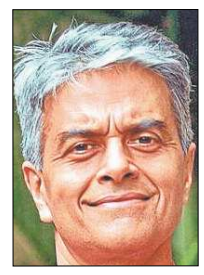

-साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखक।

जड़ों से जुड़ाव की जरूरत

राहुल सांकृत्यायन की भाषा, बोली, बौद्धज्ञान संबंधी दृष्टि एवं ज्ञान से भी हमारे ज्यादातर हिंदी क्षेत्र के समाज वैज्ञानिक या तो अनभिज्ञ हैं, या बचते हैं।

बद्री नारायण

रमेश पोखरियाल निशंक देश के नए मानव संसाधन मंत्री बनते ही विवादों के घेरे में आ गए। उनका भारतीय ज्ञान की सर्वोच्चता पर जोर देना विवाद का विषय बना। ज्योतिष के ज्ञान पक्ष और भारतीय पारंपरिक ज्ञान की शक्ति पर उन्होंने जोर देना शुरू कर दिया। उनके इस आग्रह पर असहमतियां हो सकती हैं। किंतु उनके इस कदम से भारतीय ज्ञान, चिंतन एवं विमर्श को लेकर कुछ बड़े सरोकार उभरते हैं। भारतीय ज्ञान पर हमारा ज्ञान विमर्श वह चाहे समाज विज्ञान का ज्ञान हो या विज्ञान का बहुत कम शोध हुआ है।

अगर हम समाज विज्ञान की बात करें, तो भारतीय आजादी के लगभग 72 वर्षों बाद भी समाज विज्ञान में शोध की अवधारणाएं, परिप्रेक्ष्य, शब्दावलियां प्रायः पश्चिमी चिंतकों के ज्ञान विमर्श से ली जाती हैं। सामाजिक सच्चाई पर हम भारत का अध्ययन करना चाहते हैं और पश्चिमी समाज के अनुभवों से पैदा हुई दृष्टि, अवधारणा को लेकर हम अध्ययन के लिए उतरते हैं। परिणाम होता है कि हम अपनी सामाजिक सच्चाई को ठीक से पकड़ने में असफल हो जाते हैं।

हर समाज अपना ज्ञान पैदा करता है। हर समाज अपना बौद्धिक सृजित करता है। ज्ञान एवं बौद्धिक परंपरा का अपने सामाजिक अनुभवों से गहरा तादात्मय होता है। अपने समाज की अद्भुत ज्ञान परंपरा में ही उक्त समाज को समझने देखने एवं अध्ययन करने की पद्धति छिपी होती है। लेकिन हम आज भी अपनी ज्ञान परंपरा के बारे में अपने भीतर एक हीन भावना पाले रखते हैं। फलतः पश्चिमी ज्ञानियों का संदर्भ देना, उनका गौरव ज्ञान कर हम आत्मविश्वास महसूस करते हैं। पश्चिम हमारी अस्मिता में बहुत गहरे घुसा हुआ है। प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक आशीष नंदी हमारी अस्मिता में पश्चिम के गहन प्रवेश की समीक्षा करते हुए इसे 'इन्टीमेट एनिमी'; कहते हैं। एक आत्मीय से लगने वाले शत्रु के रूप में पश्चिमी ज्ञान हमारी अस्मिता में मौजूद है। इसी के कारण हम अपने समाज के बौद्धिकों को अपनी ज्ञान परंपरा को, अपने सामाजिक शोधों में संदर्भ देने, विमर्श में लाने से बचते हैं। हमें जब पश्चिम सराहता है, तभी हम अपने समाज के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। जब महत्वपूर्ण उत्तर आधुनिक विचारक देरिदा ने बौद्ध विमर्श को अपने चिंतन में महत्व दिया, तो बौद्ध विद्वान नागार्जुन के महत्व का भान हमें हुआ।

सामाजिक ज्ञान रचने के क्रम में शंकराचार्य के दर्शन को पश्चिम में ज्यादा जगह एवं संदर्भ दिया जाता है। भारत में कम। भारत में हम उन्हें ज्ञानी, दार्शनिक के रूप में नहीं देखते वरन् उन्हें धार्मिक विमर्शकार एवं धर्म प्रचारक के रूप में देखते हैं। अनेक पौराणिक विमर्श आज की आधुनिकता से संकटग्रस्त समाज को समझने एवं उससे बचाने में हमारी मदद कर सकते हैं।

हम इस पर सोचना भी नहीं चाहते, बल्कि ऐसा सोचने को गलत भी मानते हैं।

हम विज्ञान एवं आधुनिकता पर गौरवान्वित तो होते हैं, परंतु भूल जाते हैं कि देशज आधुनिकताएं भी होती हैं एवं देशज ज्ञान-विज्ञान भी। मानव संसाधन मंत्री निशंक द्वारा ज्योतिष ज्ञान का महत्व देने पर चिंतित मीडिया आज बाजार द्वारा उत्कृष्ट ढंग से पैक किए जा रहे आयुर्वेद के ज्ञान का महत्व अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति की तुलना में स्वीकार करने लगा है। 'योग' का ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा से उपजा है। आज पूरी दुनिया योग करती दिख रही है, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय राज्य ने अपनी आलोचनाओं का परवाह न करते हुए इसे विश्व स्तर पर प्रचारित किया। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक आलोचक भी आज 'योग' की महत्ता को मानने लगे हैं।

सामाजिक विज्ञान में हिंदी क्षेत्र ने अनेक चिंतक पैदा किए, किंतु उन्हें हम अपने सामाजिक शोधों में संदर्भित भी नहीं करते और देरिदा, फूको और हेबरमॉस में फंसे रहते हैं। अगर हिंदी क्षेत्र की बात करें, तो बनारस में रहने वाले संस्कृत के महान ज्ञानी गोपीनाथ कविराज का चिंतन एवं दृष्टि हमारे पूरे विमर्श से गायब है। राहुल सांकृत्यायन की भाषा, बोली, बौद्धज्ञान संबंधी दृष्टि एवं ज्ञान से भी हमारे ज्यादातर हिंदी क्षेत्र के समाज वैज्ञानिक या तो अनभिज्ञ हैं, या बचते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी को हम मात्र हिंदी का साहित्यकार बनाकर छोड़ देते हैं, परंतु उनका गोगा पीर के मेले का अदभुत नृतत्व शास्त्रीय अध्ययन हमारे सामाज विज्ञान एवं नृतत्व शास्त्र के विमर्श में कहीं जगह नहीं पाता। उत्तर प्रदेश के समाज के अध्ययन में प्रेमचंद के निबंधों से निःसृत अंतर्दृष्टि का हम कोई उपयोग नहीं कर पाते। वासुदेव शरण अग्रवाल हिंदी क्षेत्र के चिंतक हैं। गंवई समाज के अध्ययन की जो अंतर्दृष्टि उनके पास है, वैसी न तो किसी भारतीय समाजशास्त्री में हमने पाई है और न ही पश्चिमी समाज शास्त्रियों में। परंतु भारतीय गांव पर हुए अध्ययनों में समाज वैज्ञानिकों ने अभी तक वासुदेव शरण अग्रवाल को कोई जगह नहीं दी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की ओवररीडिंग अगर गलत है, तो उपनिवेशवाद द्वारा सृजित हीनभावना के कारण उसका 'आलोचनात्मक मूल्यांकन' न करना, उसका पूर्ण अस्वीकार शायद उससे भी ज्यादा गलत है। आधुनिकता भारतीय समाज में गहरे सर्वग्रासी संकट पैदा कर रही है, जिससे मुक्ति के लिए हमारा पारंपरिक ज्ञान हमारी मदद कर सकता है। पश्चिम प्रभावित आधुनिकता के बरक्स देशज आधुनिकता शायद भारतीय समाज के लिए ज्यादा मुफीद होगी। जरूरत है अपनी ज्ञान परंपरा में जो भी प्रासांगिक शक्ति तत्व है, उनका अवगाहन कर उन्हें हमारे सामाजिक विमर्शो का हिस्सा बनाना। ज्ञान के देशज एवं स्थानीय स्रोतों की तलाश भी हमारी एक बड़ी जरूरत है। अकादमिक संस्थानों, शोध केंद्रों एवं विश्वविद्यालयों में आज जरूरी है कि हम उपनिवेशवाद उत्पादित हीनता बोध से मुक्त हो अपने देशज बौद्धिक संस्रोत, अपने ज्ञान एवं स्थानीय ज्ञान परंपराओं को आज के विमर्श में महत्व दें।

- निदेशक, गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान

मंजिलें और भी हैं

>> देव कुमार वर्मा

कोल बेल्ट के बच्चे शिक्षा के सपने को कर रहे साकार

झारखंड के धनबाद को देश की कोल राजधानी कहा जाता है। इसी जिले के कतरास गांव में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिता पान की छोटी सी दुकान चलाते थे, साथ ही कोयला मजदूरी भी करते थे। गांव में ज्यादातर लोग कोयला मजदूर होने के साथ शराब की लत के शिकार थे। बहुत सारे ऐसे लोग भी थे, जो रात के अंधेरे में कोयला चोरी कर लाते और दिन में उसे साइकिल पर लादकर बेचने जाते थे। शिक्षा पर किसी का कोई ध्यान नहीं था। मेरे मन में इनके लिए कुछ करने के विचार चलते रहते थे। कॉलेज तक की पढ़ाई करने के बाद मैंने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दुर्गापुर से स्नातक और फिर भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ से एमडीपी किया। इसके बाद मुझे कोलकाता स्थित कोल इंडिया लिमिटेड में नौकरी मिल गई।

धनबाद के आसपास लाखों की संख्या में लोग रहते हैं, बावजूद इसके कुछ ही ऐसे स्कूल हैं जहां अच्छी शिक्षा दी जाती है। ज्यादातर बच्चे जो कि गरीब परिवार से आते हैं, या तो सरकारी स्कूलों में जाते हैं या फिर पढ़ते ही नहीं हैं। चार साल तक कोलकाता में काम करने के बाद, मेरा तबादला झारखंड में हुआ। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मेरी नियुक्ति जिले के चुनाव अधिकारी के रूप में हुई। कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए मैं एक स्कूल के दौरे पर गया। वहां मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि 9वीं और 10वीं कक्षा के छात्र 'शिक्षक' जैसे आसान हिंदी शब्द भी ठीक से नहीं लिख सकते थे।

करीब 40 किलोमीटर के इस इलाके में हमारी तीन शाखाओं में 500 से अधिक बच्चे पढ़ाई करते हैं।

मुझे यहां के स्कूलों में शिक्षा की दयनीय स्थिति की झलक मिल गई। मैंने इस स्थिति को सुधारने के लिए झारखंड के मुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री को पत्र लिखे। जवाब में उनके आश्वासन और मेरी सराहना के पत्र तो आए, पर चार महीने बाद भी जमीनी स्तर पर कोई बदलाव नहीं दिखा। फिर बच्चों की शिक्षा को मैंने सुधारने का निर्णय लिया। मैंने अपने पैतृक घर को गांव के बच्चों के लिए मुफ्त ट्यूशन केंद्र में तब्दील कर दिया। शुरू में केवल पांच बच्चे आए पर धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ने लगी। जब बच्चों की संख्या बढ़कर 100 हो गई, तो हमने इस स्कूल को पंजीकृत करवाने का निर्णय लिया, और इस तरह, 'पाठशाला' का जन्म हुआ। इस अभियान को मुकाम तक पहुंचाने में मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बहुत सारे बच्चे ऐसे थे जो नियमित कक्षा में नहीं आते थे, उनके परिजन उन्हें रोक लेते थे, ताकि वे उनके रोजमर्रा के कार्यों में मदद कर सकें। मैं उन बच्चों के घर जाता, उनकी अनुपस्थिति का कारण पूछता और उनके माता-पिता से बच्चों को दोबारा स्कूल भेजने को कहता। धीरे-धीरे ये बच्चे स्कूल आने लगे। पाठशाला में हम झारखंड के कोल बेल्ट के बच्चों को पांचवीं कक्षा तक अंग्रेजी माध्यम में बिना किसी शुल्क के शिक्षा देते हैं। करीब 40 किलोमीटर के इस इलाके में हमारी तीन शाखाओं में 500 से अधिक बच्चे पढ़ाई करते हैं। इन स्कूलों में प्रोजेक्टर, लैपटॉप, बायोमीट्रिक हाजिरी, एक्वागार्ड कूलर, खेल मैदान, लड़के-लड़कियों के लिए अलग- अलग शौचालय जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। इस पहल में मेरी पत्नी और दोस्त आर्थिक सहयोग करते हैं, बाकी रूपए मैं अपने वेतन से खर्च करता हूं।

बच्चों को पढ़ाई के प्रति नियमित और सजग रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहना चुनौती भरा काम है। हमारी मेहनत अब रंग लाने लगी है। बच्चों को आगे बढ़ते देख इनके मां-बाप के चेहरे पर जो खुशी होती है, वह दिल को छूने वाली है। हम आने वाले सालों में पाठशाला का विस्तार करना चाहते हैं, ताकि अधिक से अधिक बच्चों को बड़ी कक्षाओं की पढ़ाई में भी मदद मिल सके।

हिंदी पट्टी की सुंदरता

हाल ही में फेमिना मिस इंडिया चुनी गईं तीन शीर्ष लड़कियां हिंदी पट्टी के उन पिछड़े राज्यों से ताल्लुक रखती हैं, जहां ऐसी कामयाबी के मायने बाजार से ज्यादा लड़कियों के अंदर सपनों का पीछा करने की ललक के संदर्भ में ज्यादा हैं।

टीवी, फिल्मों या सौंदर्य प्रतियोगिताओं में विजयी रहने वाली लड़कियों की कामयाबी को लेकर हमारे समाज में एक ग्रंथि कायम रही है। माना जाता है कि ऐसे ज्यादातर क्षेत्रों में स्त्रियां अपनी योग्यता के कारण नहीं, सिर्फ शारीरिक सुंदरता के बल पर जीतती हैं। पर जब हम हाल में फेमिना मिस इंडिया चुनी गई शीर्ष तीन लड़कियों पर नजर डालते हैं, तो वहां हमें एक खास संदेश देखने को मिलता है। इस बार प्रतियोगिता में पहले के तीन स्थानों और रनर अप के लिए महानगरीय स्टीरियोटाइप लड़कियों के बजाय राजस्थान, छत्तीसगढ़, बिहार जैसे राज्यों की और सीए, इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट जैसे आला विषयों की पढ़ाई कर रही लड़कियों ने कब्जा जमाया है।

मुमकिन है कि इस किस्म का चुनाव करते हुए आयोजकों का खास उद्देश्य रहा हो। बाजार की जो ताकतें अब महानगरों से नीचे उतरते हुए पिछड़े राज्यों के उपेक्षित इलाकों में अपने बिजनेस के अवसर खोज रही हैं, उनका कोई दबाव इस चयन के पीछे काम कर रहा हो। पर प्रतियोगिता में सफल रही राजस्थान की सुमन राव, छत्तीसगढ़ की शिवानी जाधव और बिहार की श्रेया शंकर हिंदी पट्टी के जिन पिछड़े राज्यों से ताल्लुक रखती हैं, वहां ऐसी कामयाबी के मायने बाजार से ज्यादा लड़कियों के अंदर सपनों का पीछा करने की ललक जगने के संदर्भ में ज्यादा हैं।

सौंदर्य प्रतियोगिता में मिली सफलता को अब सुंदरता के आधार पर मिली कामयाबी भर नहीं माना जाता। हालांकि इसके पीछे जो आशंकाएं हैं,

मनीषा सिंह

उसके दो पक्ष हैं। एक पक्ष वह है, जिसमें स्त्री मर्दों के हाथ का खिलौना और अरबों डॉलर वाले सुंदरता के वैश्विक बाजार का उपयोगी माध्यम है। दूसरा पक्ष वह है, जिसमें यही स्त्री अपने कौशल के बल पर नित नए क्षेत्रों में सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रही है, हालांकि ऐसा करते हुए भी सुंदर दिखने की उसकी शाश्वत इच्छा में कोई कमी नहीं आई है। ज्यादातर सौंदर्य प्रतियोगिताएं इसलिए बेमानी ठहराई जाती हैं, क्योंकि उनमें प्रतिभागी लड़कियों से सिर्फ सुंदर दिखने की अपेक्षा की जाती है और ज्ञान का स्तर नापने के लिए बेहद साधारण सवाल पूछे जाते हैं। इन आधारों पर साबित करने की कोशिश होती है कि महिलाओं के तर्क का स्तर पुरुषों से कमतर होता है। एक तर्क यह भी है कि ऐसी प्रतियोगिताएं इस रूढ़िवादी सोच को बढ़ावा देते हैं कि सिर्फ सुंदर दिखकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। पर इस सच का एक पहलू यह भी है कि महिलाएं कठिन से कठिन मापदंडों पर खरी उतर रही हैं।

सौंदर्य को दो पैमानों पर आंकना चाहिए। एक स्त्री का प्राकृतिक सौंदर्य है। दूसरी है सांस्कृतिक सुंदरता। पर समाज स्त्री सौंदर्य के दूसरे पहलू को पकड़ नहीं पा रहा। अच्छी बात यह है कि सौंदर्य प्रतियोगिता के जिन मंचों पर सुंदरता का ज्यादा महत्व माना जाता है, वहां भी ये लड़कियां अपनी बुद्धिमता का परिचय दे रही हैं। वैसे ही, जैसे दशकों पहले मिस वर्ल्ड पहली भारतीय रीता फारिया ने सुंदरता का कीर्तिमान स्थापित करने के बाद डॉक्टर बनकर समाज की सेवा की थी।

आज हर मोर्चे पर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी स्त्री की सुंदरता का वह उद्देश्य नहीं रहा, जो पहले था। अब जरूरी है कि स्त्री के आगे बढ़ने की प्रक्रिया को देह की सुंदरता से जोड़े रखने की मानसिकता के बजाय इस नजर से देखा जाए कि आज विभिन्न पेशों में स्त्रियां जिन ऊंचे मुकामों पर हैं, वहां वे अपनी जेहनियत की वजह हैं, न कि महज शारीरिक सौंदर्य के बल पर।

खुली खिड़की

फिल्मों की वैश्विक कमाई

फिल्में मनोरंजन का प्रमुख साधन हैं। आज के समय में ज्यादातर फिल्मों को एनिमेशन विधियों का प्रयोग कर विशेष प्रभावी बनाया जा रहा है। हाल के कुछ वर्षों में एनीमेशन से सजी हुई फिल्मों ने रिकॉर्ड कमाई की है।

■ नोट : आंकड़े अरब डॉलर में हैं। ■ स्रोत : बॉक्स ऑफिस मोजो

सत्संग

करुणा की भावना

एक बार महाराष्ट्र में अकाल पड़ा। अन्न के अभाव में लोग मरने लगे। धामण गांव के पटवारी माणकोजी बोधला अकाल पीड़ितों की सेवा में जुट गए। उन्होंने अपने घर तथा खेत के गोदामों में रखा सारा अनाज अकाल पीड़ितों को बांट डाला। पटवारी तथा उनकी पत्नी ने घर के समस्त आभूषण तथा पशु तक बेच कर अकाल पीड़ितों के लिए बाहर से अन्न मंगाकर बांट दिया।

माणकोजी ने देखा कि अब भी अकाल-पीड़ितों का तांता लगा हुआ है। उन्होंने कुल्हाड़ी उठाई, जंगल में पहुंच लकड़ियां काटी तथा उन्हें बेचकर मिले तीन पैसों से एक पैसा भगवान को अर्पित किया तथा दो पैसे का आटा मंगाकर भूखों की प्रतीक्षा करने लगे। लोगों को पता चला कि माणकोजी अकाल पीड़ितों की सहायता में अपना सब कुछ गंवा चुके हैं। उन्हें दीन-हीन मानकर कोई उनके पास मदद मांगने नहीं आया। यह देख भगवान लक्ष्मी-नारायण ब्राह्मण-ब्राह्मणी का रूप धारण कर माणकोजी के घर जा पहुंचे। माणकोजी ने उनके सामने पोटली खोलकर आटा रख दिया तथा कहा, महाराज, रोटियां बनवाए देता हूं, उन्हें प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लेना। घर ले जाने को देने के लिए अब मेरे पास कुछ नहीं बचा है। देखते-देखते ब्राह्मण-ब्राह्मणी के स्थान पर लक्ष्मी-नारायण प्रकट हो गए, जो भूख-पीड़ितों के प्रति करुणा की भावना से प्रसन्न होकर माणकोजी को आशीर्वाद दे रहे थे।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

रोहन, पिता और लड़ाई

यह कहानी रोहन की है, जिसे अपने पिता से रिश्ते की गर्मजोशी की सीख मिली।

अपने माता-पिता को फिर से लड़ते देख रोहन दुखी हो गया। लड़ाई खत्म हो जाने के बाद पिता के पास जाकर वह बोला, पापा, आप लोग इतना लड़ते रहते हैं। इसके बाद भी साथ रहते हैं, अलग होने के बारे में नहीं सोचते। जबकि अलग हो जाने से आप दोनों खुश तो रह पाएंगे। यह सुनकर रोहन के पिता हंसते हुए बोले, बेटा, तुमने कभी साही देखा है? रोहन बोला, नहीं, पापा। पर मेरी इस बात में साही कहां से टपक पड़ा? पिता बोले, जब ठंड बढ़ जाती है, तो कई जानवर मरने लगते हैं। तब सारे साही एक दूसरे से चिपक कर बैठ जाते हैं। एक दूसरे के शरीर से इन्हें गर्मी मिलती है। हालांकि चिपकने के कारण उन्हें एक दूसरे के कांटे भी खूब चुभते हैं। पर कंपकंपाती ठंड में उनके पास दूसरा विकल्प भी नहीं होता। या तो वे कांटे की चुभन सह लें या ठंड में जम जाएं। रोहन ने अपना पुराना सवाल फिर से दोहराया, पर मेरी बात में आप साही का जिक्र कहां से ले आए? रोहन के पिता बोले, बेटा, हमारा हर रिश्ता ऐसा ही होता है। किन्हीं दो लोगों को ले लो, फिर वह तुम और मैं ही क्यों न हों। क्या हमारी सोच एकदम एक जैसी हो सकती है? नहीं। हम एक दूसरे की अलग-अलग सोच से ही सीखकर आगे बढ़ते हैं। कई बार हमें एक दूसरे की बातें चुभती हैं। पर यही बातें हमें सोचने के लिए मजबूर भी तो करती हैं। कई बार हम सिर्फ इसका एक ही पहलू देख पाते हैं। लेकिन यही वाद-विवाद हमें दूसरे पहलू का भी एहसास कराता है। अगर किसी घर में वाद-विवाद न हो, तो लोग एक दूसरे से कुछ सीखेंगे ही नहीं। तुम्हारी मम्मी और मैं चाहे कितना भी लड़ लें, हम एक दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं। समझे? रोहन मुस्कराते हुए बोला, तो ठीक है, आप लोग इसी तरह लड़ते हुए एक दूसरे से सीखते रहिए।

वाद-विवाद रिश्ते की कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत हैं।